प्रातः क्लास 25/11/68 ओम शांति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओम शांति। रूहानी बाप शिव बैठकर अपने रूहानी बच्चों शालीग्रामों को समझा रहे हैं। क्या समझा रहे हैं? सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का सभी राज़ समझाते हैं, और यह समझाने वाला एक ही है। और तो जो भी आत्माएँ अथवा शालीग्राम है सभी के शरीर का नाम है। बाकी तो एक ही परमपिता परमात्मा है जिसको शरीर नहीं है। उस परम आत्मा का नाम है शिव। पतित-पावन। वही खुद अपने बच्चों (को) सारे विश्व के आदि-मध्य-अंत का राज़ समझा रहे हैं। पार्ट बजाने लिए तो सभी यहाँ ही आते हैं। यह भी समझाया है विष्णु के दो रूप हैं। शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं। यह सभी बाप बैठ समझाते हैं। बाप कब आते हैं? जबकि नई सृष्टि की स्थापना होती है और पुरानी का विनाश होना है ज़रूर। बच्चे जानते हैं नई दुनिया में एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है ज़रूर। वह तो सिवाय परमपिता परमात्मा के और कोई कर नहीं सकता। वह .... ही परमपिता परमात्मा है जिसको परमात्मा कहा जाता है। उनका नाम है शिव। उनका शरीर का नाम नहीं पड़ता। और जो भी हैं सभी का शरीर का नाम पड़ता है। यह भी समझते हो मुख्य-2 जो हैं वह तो सभी आ गये हैं। ड्रामा का चक्र फिरते-2 अभी आकर अंत हुआ है। अंत में तो बाप ही आना चाहिए। उनकी जयंती भी मनाते हैं। शिवजयंती मनाते भी इस समय हैं, जबकि दुनिया बदलनी है, घोर-अंधियारा से घोर सोझरा होना है। बच्चे जानते हैं परमपिता परमात्मा शिव ही एक ही बार पुरुषोत्तम संगमयुग पर आते हैं पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना करने। पहले नई दुनिया की स्थापना, पीछे पुरानी दुनिया का विनाश होता है। बच्चे समझते हैं पढ़कर हमको होशियार होना है और दैवीगुण भी धारण करनी है। आसुरी गुण पलटनी है। दैवीगुण और आसुरी गुणों का वर्णन चार्ट में दिखाना होता है। अपन को देखना है हम कोई को तंग तो नहीं करते हैं, झूठ तो नहीं बोलते हैं, श्रीमत के बरखिलाफ तो नहीं चलते हैं। झूठ बोलना, किसको तंग करना, किसको दुख देना, यह है रावण के कायदे और वह है राम के कायदे। श्रीमत और आसुरी मत का गायन भी है। आधा कल्प चलती है आसुरी मत, जिससे मनुष्य दुःखी, रोगी बन जाते हैं। 5 विकार प्रवेश हो जाते हैं। बाप आकर श्रीमत देते हैं। बच्चे जानते हैं श्रीमत से हमको दैवीगुण मिलते हैं। आसुरी गुण को भूलना है। अगर आसुरी गुण रह जावेगा तो पद कम हो पड़ेगा और जन्म-जन्मांतर का पाप का बोझा जो सिर पर है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उनका कुछ हिस्सा रह जावेगा। यह भी समझते हो अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाप द्वारा अभी दैवी गुण धारण कर नई दुनिया के मालिक बनते हैं। तो सिद्ध होता है पुरानी दुनिया का विनाश ज़रूर होना ही है। नई दुनिया की स्थापना ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ द्वारा होनी है। यह भी पक्का निश्चय है इसलिए सर्विस पर लगे हुये हैं, कोई न कोई का कल्याण करने मेहनत करते रहते हैं। तुम जानते हो हमारे भाई-बहन कितनी सर्विस करते हैं। म्युज़ियम बनाते हैं। सभी को बाप का परिचय देते रहते हैं। बाप आये हैं तो ज़रूर पहले-2 थोड़ों को ही मिलेगा। फिर वृद्धि को पाते रहेंगे। एक ब्रह्मा द्वारा कितने ब्रह्मा(कुमार) कुमारियाँ बनते हैं। ब्राह्मण कुल तो ज़रूर चाहिए। तुम जानते हो हम सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं। शिवबाबा के बच्चे सभी भाई-2 हैं। असल में भाई-2 हैं फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बनने से भाई-बहन बनते हैं। फिर देवता कुल में जावेंगे तो संबंध की वृद्धि होती जावेगी। इस समय ब्रह्मा के बच्चे और बच्चियाँ हैं। तो एक ही कुल हुआ। उनको डिनायस्टी नहीं कहेंगे। राजाई न कौरवों की है, न पाण्डवों की है। डिनायस्टी तब होती है, राजा-रानी नम्बरवार गद्दी पर बैठते हैं। अभी तो है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। शुरू से लेकर पवित्र डिनायस्टी चली आई है। पवित्र डिनायस्टी देवताओं की चली है। यह अभी स्मृति मिली है। बच्चे जानते हैं 5000वर्ष पहले हेविन था, तो पवित्र डिना॰ थी। इन्हों के चित्र भी हैं। मंदिर कितना आलीशान बने हुये हैं और कोई के मंदिर नहीं हैं। इन देवताओं के ही बहुत मंदिर हैं। तो बच्चों को समझाया, और सभी की शरीर के नाम बदली होते हैं, इनका एक ही नाम है शिव चला आता है। शिवभगवानुवाच। कोई भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता। सतुयग आदि में भी

... इन देवताओं का राज्य था, जो फिर होगा। इस सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सूक्ष्मवतन की तो बात ही नहीं है। बाप सृष्टि के चक्र का नॉलेज देते हैं, यह चक्र कैसे फिरता है। बाकी और कुछ है नहीं। सूक्ष्मवतन में कुछ ठहर नहीं सकता। यह तो एक सा॰ की रसम हैं, जो तुम भोग आदि लगाते हो। अगर ब्रह्मा भी है, वह भी एमऑबजेक्ट का सा॰ होता है। जैसे विष्णु का सा॰ होता है। वैसे यह भी एमऑबजेक्ट, हमको ऐसा कर्मातीत अवस्था को पाना है। इसके लिए सा॰ होता है। यह सभी बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। बाप बिगर और कोई बाप का परिचय दे न सके; क्योंकि वह तो बाप को जानते ही नहीं। यहाँ भी बहुत हैं जिनको बुद्धि में नहीं आता, बाप को कैसे याद करें। मूँझते हैं इतनी छोटी बिन्दी उनको याद कैसे करें? शरीर तो बड़ा है ना। उनको ही याद करते रहते हैं। यह भी सिर्फ गायन है भृकुटि के बीच चमकता है अजब सितारा। अर्थात् आत्मा सितारे मिसल है। आत्मा को शालीग्राम भी कहा जाता है। शिवलिंग की भी बड़े रूप में पूजा होती है। जैसे आत्मा को देख नहीं सकते, शिवबाबा भी किसको देखने में आ न सके। शिवबाबा आते हैं, चले जाते हैं, कैसे किसको पता पड़े? बिंदी को तो पहचान भी न सके। भक्तिमार्ग में बिंदी की पूजा कैसे करें; क्योंकि पहले-2 शिवबाबा की अव्यभिचारी पूजा शुरू होती है ना। तो पूजा के लिए ज़रूर बड़ा चीज़ चाहिए। शालीग्राम भी बड़ा अंडे मिसल बनाते हैं। एक तरफ अँगुष्ठ मिसल है, फिर सितारा भी कहते हैं। आसुरी बुद्धि है ना। अभी तुमको तो एक बात पर ठहरना है। आधा कल्प बड़ी चीज़ की पूजा की है। अभी फिर बिंदी समझना है। इसमें मेहनत लगती है, इसलिए मूँझते हैं। यह भी समझने की बात है, जैसे आत्मा स्टार मिसल है, वैसे परमात्मा भी है। देख नहीं सकते, यह बुद्धि से जाना जाता है। शरीर में आत्मा प्रवेश करती है (जो) फिर निकलती है। कोई देख तो नहीं सकता। बड़ी चीज़ हो तो देखने में भी आवे। बाप भी ऐसे बिंदी है; परंतु वह ज्ञान का सागर है। और कोई को ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे। शास्त्र तो हैं भक्तिमार्ग के। इतने सभी वेद-शास्त्र आदि किसने बनाई? कहते हैं व्यास ने बनाई। क्राइस्ट की आत्मा ने कोई शास्त्र बनाया नहीं, यह भी बाद में मनुष्य बैठ बनाते हैं। ज्ञान तो उनमें है नहीं। ज्ञान का सागर है ही बाप। शास्त्रों में ज्ञान की, सद्गति की बातें ही नहीं। हरेक धर्म वाला अपने धर्म स्थापक को याद करते हैं। देहधारी को याद करते हैं। क्राइस्ट का भी चित्र है ना। सभी के चित्र हैं। शिवबाबा तो है ही परमआत्मा, अभी तुम समझते हो आत्माएँ सभी ब्रदर्स हैं। ब्रदर्स में ज्ञान हो न सके, जो किसको ज्ञान देकर और सद्गति करे। सद्गति करने वाला है एक ही बाप। इस समय ब्रदर्स भी है और बाप भी है। सारे विश्व का बाप आकर सारे विश्व की आत्माओं को सद्गति देते हैं। विश्व का सद्गति दाता है ही एक बाप। श्री-श्री 108 जगदगुरु कहो अथवा विश्व का गुरु कहो, बात एक ही है। अभी तो है आसुरी राज्य। 100% आसुरी बुद्धि मनुष्यों की है। संगम पर ही बाप आकर यह सभी बातें समझाते हैं। तुम जानते हो बरोबर अभी नई दुनिया की स्थापना हो रही है और पुरानी दुनिया का विनाश होना है। यह भी समझाया है पतित-पावन एक ही निराकार बाप है। कोई देहधारी पतित-पावन हो न सके। पतित-पावन परमात्मा ही है। अगर पतित-पावन सीताराम भी कहें, तो भी बाप ने समझाया है भक्ति का फल देने भगवान आता है, तो सभी सीताएँ ठहरी। एक है रा(म)। ब्राइड्स और ब्राइडग्रुम, जो सभी को सद्गति देने वाला है। यह बातें बाप ही समझाते हैं। ड्रामा अनुसार तुम ही फिर 5000वर्ष बाद यह बातें सुनेंगे। अभी तुम सभी पढ़ रहे हो। स्कूल में कितने ढेर पढ़ते हैं। यह सभी ड्रामा बना हुआ है। जिस समय जो पढ़ते हैं, जो एक्ट चलती है, वही एक्ट फिर कल्प बाद भी होगी। हूबहू 5000 वर्ष बाद फिर पढ़ेंगे। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। जो भी देखेंगे सेकण्ड व सेकण्ड नई चीज़ दिखाई पड़ेगी। चक्र फिरता रहेगा। नई-2 बातें तुम देखते रहेंगे। अभी तुम जानते हो यह 5000वर्ष का ड्रामा है जो चलता रहता है, इनकी डिटेल तो बहुत है। मुख्य-2 बातें समझाई जाती हैं। जैसे कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है, बाप समझाते हैं सर्वव्यापी नहीं हूँ। बाप आकर अपना और अपनी रचना के आदि-मध्य-अंत का (परि)चय

देते हैं। तुम बच्चे अभी जानते हो बाप कल्प-2 आते हैं हमको वर्सा देने। यह भी गायन है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। इसमें समझाने(नी) बहुत अच्छी है। विराट रूप का भी ज़रूर अर्थ होगा ना; परंतु सिवाय बाप के कोई समझा न सके। चित्र तो बहुत ..... हैं; परंतु एक की भी समझानी कोई पास है नहीं। ऊँच ते ऊँच एक शिवबाबा, उनका ही चित्र है; परंतु जानते ही नहीं। अच्छा, फिर सूक्ष्मवतन, उनको तो छोड़ दो। उनकी दरकार ही नहीं। हिस्ट्री जॉग्राफी यहाँ की समझनी होती है। वह तो है सा॰ की बात। जैसे यहाँ इसमें बाप बैठ समझाते हैं वैसे सूक्ष्मवतन में कर्मातीत शरीर में बैठकर इनसे मिलते हैं अथवा बोलते हैं। बाकी वहाँ कोई वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी है नहीं। हिस्ट्री जॉग्राफी यहाँ की है। बच्चों को बुद्धि में बैठा हुआ है सतयुग में यह देवी-देवताएँ थे, जिसको 5000वर्ष हुआ। इस आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कैसे हुई, यह कोई नहीं जानते। औरों की तो सभी जानते हैं। किताब आदि भी हैं। लाखों वर्ष की तो बात हो भी नहीं सकती। यह तो बिल्कुल रांग है; परंतु मनुष्यों की बुद्धि कुछ काम नहीं करती है। हर बात बाप बैठ समझाते हैं। मीठे-2 बच्चों अच्छी रीत धारणा करो। मुख्य बात है बाप की याद। यह तो जानते हो पुण्यात्मा बनते जाते हैं नम्बरवार। रेस होता है ना। कोई-2 अकेले दौड़ते हैं। कोई जोड़ी को इकट्ठा बांध फिर दौड़ते हैं। यहाँ भी जो जोड़ी है वह इकट्(ठे) दौड़ी पहनने प्रैक्टिस करते हैं। सतयुग में ऐसे इकट्ठे जोड़ी बन दिखावेंगे। भल नाम-रूप तो बदल जाता है। वही शरीर थोड़े ही मिलता है। शरीर तो बदलते रहते हैं। समझते हैं आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। फीचर्स तो दूसरा होगा। बच्चों को वण्डर लगना चाहिए, जो फीचर्स, जो एक्ट सेकण्ड व सेकण्ड पास हुआ वह फिर हूबहू रिपीट होना है। कितना वण्डरफुल यह बड़ा नाटक है! और कोई समझा नहीं सकते। तुम जानते हो हम पुरुषार्थ करते हैं। नम्बरवार तो बनेंगे ही। (स)भी तो कृष्ण नहीं बनेंगे। फीचर्स सभी के अलग-2 होते हैं। कितना वण्डरफुल नाटक है! एक फीचर्स न मिले दूसरे से। वही खेल हूबहू रिपीट होता रहता है। यह सभी विचार कर आश्चर्य खाना होता है, कैसे बेहद का बाप पढ़ाते हैं। जन्म जन्मांतर तो भक्ति के शास्त्र आदि पढ़ते आये, साधुओं की कथाएँ आदि भी सुनी। अभी बाप कहते हैं भक्ति का समय पूरा हुआ। अभी भक्तों को भगवान द्वारा फल मिलता है। यह नहीं जानते, भगवान कब, किस रूप में आवेगा। कब कहते हैं शास्त्र आदि पढ़ने से भगवान मिलेगा। कब कहते हैं यहाँ आवेगा। शास्त्रों से ही अगर काम हो जाता तो फिर बाप को क्यों आना पड़े? शास्त्र पढ़ने से ही भगवान मिल जाये तो बाकी भगवान यहाँ आकर क्या करेंगे? आधा कल्प तुम यह शास्त्र आदि पढ़ते आये हो; परंतु फायदा कुछ भी नहीं। गीता का भगवान ही सारे विश्व की सद्गति करते हैं। बाकी शास्त्र आदि तो पढ़ते-2 तमोप्रधान ही बनते आये हो। तुम बच्चों को सृष्टि का चक्र भी समझाते रहते हैं, और दैवी चलन भी चाहिए। एक तो किसको दुख न देना है। ऐसे नहीं कोई को विख चाहिए वह न देते हो, यह कोई दुख देना है। ऐसे तो बाप कहते नहीं हैं। कई ऐसे भी बुद्धू निकलते हैं जो कहते हैं बाबा समझाते हैं किसको दुख न देना है। अभी यह विख मांगते हैं तो उनको देना चाहिए। नहीं तो (य)ह भी किसको दुख देना हुआ ना। ऐसे समझने वाले मूढ़मति भी हैं। बाप तो कहते हैं पवित्र ज़रूर बनना है। आसुरी चलन और दैवी चलन की भी समझ चाहिए ना। मनुष्य तो यह भी नहीं समझते। वह तो कह देते आत्मा निर्लेप है। कुछ भी करो, कुछ भी खाओ-पीओ, विकार में जाओ, कोई हर्जा नहीं है। ऐसे भी आसुरी बुद्धि वाले गुरु लोग होते हैं। महऋषि आदि क्या सिखलाते हैं। कितने को पकड़कर ले आते हैं। बाहर में भी वेजीटेरियन बहुत रहते हैं। ज़रूर अच्छा है तब तो वेजीटेरियन बनते हैं। सभी जातों में वैष्णव होते हैं। छी-छी चीज़ें नहीं खाते हैं। मैनॉरिटी होती है। तुम भी मैनॉरिटी हो। इस समय तुम कितने थोड़े हो। आस्ते-2 वृद्धि को पाते रहेंगे। बच्चों को यही शिक्षा मिलती है, दैवी गुण धारण करो। छी-छी वस्तु ऐसी कोई हाथ की बनाई हुई नहीं खानी चाहिए। बहुत पूछते हैं बाबा पार्टियों में जाना पड़ता है, मेस का खाना पड़ता है। पार्टी में बड़े-2 ऑफीसरों को इनवाइट करते हैं, तो उसमें मिठाई, फ्रूट, चाय आदि सभी खाते हैं। तो पार्टी करते हो तो तुमको भी

खाना पड़े। बाहर वाले खावें और खुद न खावेंगे तो कहेंगे बाकी हमको क्यों खिलाते हो? ऐसे बहुत कहते हैं पार्टियों में जाना पड़ता है। साथ में बैठना पड़ता है, आना-जाना होता है। बाप समझाते रहते हैं राज़ी भी करना है। बड़ा ऑफीसर है वह खावे और तुम न खाओ, यह शोभा नहीं होगी। वह तो ज़रूर ऑफर करेंगे। मांस आदि की तो बात ही नहीं। फल आदि है, हर्जा नहीं है। चाय पीने में हर्जा नहीं है। तुम बोलेंगे हम किसके हाथ का नहीं पीते हैं, कहेंगे हमको पिलाते हो तुम नहीं पीते हो? यह कहाँ की बात है? बाबा तो दुनिया (में) रहा भी है ना। बिल्कुल साहुकार साथ भी रहे, तो बिल्कुल गरीबों साथ भी रहे हैं; क्योंकि क्वीन किंग आदि के साथ भी कनेक्शन में बहुत आये हैं। मुसलमानों साथ भी रहे हैं। क्या-2 खाते थे। अभी तो कोई ऐसी चीज़ नहीं खाते हैं। किसके लिए अच्छी चीज़ बनाते हैं तो खाना भी पड़े। ससुर घर जाना और कहना हम कुछ नहीं खावेंगे तो उन्हों को दुख होगा ना। नाठी(नाती) आवे, सासु-ससुरा कुछ खाने लिए देवें मिठाई आदि, भल वह जानते हैं यह पक्का वैष्णव है, शुद्धता से बनाकर देते हैं प्यार से, कहते हैं अच्छा और कुछ न खाओ यह चाय पीओ वा पानी पीओ। कोई-2 तो पानी भी नहीं पीते हैं। बाबा तो सदैव कहते हैं दूध-चाय आदि पीने में हर्जा नहीं है। जैसा-2 समय ऐसे युक्ति से चलना है। बाप की याद से ही तुम सारे विश्व को पावन बनाते हो, तो इस चीज़ को पवित्र नहीं बना सकते हो। गृहस्थ व्यवहार में रहते हो, आना-जाना तो पड़ता होगा। कोई से काम भी निकालना होता है। बाबा कब मना नहीं करते कि किसका पानी भी नहीं पीओ। (वो) भी अगर ब्राह्मण कुल के हैं तो उनके हाथ का तो (खाना) चाहिए। ब्राह्मण कुल वालों पास भी पानी तक भी नहीं पीते ऐसे भी ... हमारे पास वैष्णव बने हैं, बा(बा) से भी तीखे। वह ऑफर करते हैं, मैं ब्राह्मणी हूँ, हमने अपने हाथ से बनाया है, तो भी नहीं लेते। पानी भी नहीं पीते, तो वह दिल में कितना नाराज़ होती होगी। मुफ्त किसको दुखी करते हैं, नाराज़ करते हैं। बाबा ऐसे थोड़े ही कहते हैं, किसको नाराज़ करो। अपने ब्राह्मण कुल हैं उनका भी नहीं लेते हैं। किसको नाराज़ न करना चाहिए। ऐसे भी बहुत अच्छे-2 हैं बाबा के दिल पर चढ़े हुये, वह भी नाराज़ हो पड़ते हैं। कहते हैं हमने अपने हाथ से बनाया है तो भी लेते नहीं। फ्रूट नहीं लेते। टूमच हुआ ना। इनको फिर अहंकार, देहअभिमान कहा जाता है। बाप तो ऐसी शिक्षा नहीं देते। बाप तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते ज़रूर ऑफीसरों पास, दोस्तों पास जाना पड़ेगा, वह ऑफर करेंगे, यहाँ भी कोई आते हैं तो तुम खातरी करते हो ना। राज़ी रखना चाहिए। टूमच में न जाना चाहिए। नहीं तो नाम बदनाम होता है। फिर निंदा होती है, ब्रह्माकुमारियाँ देखो कितना हठ करती हैं। प्रेम से कोई खिलाते हैं तो भी खाते नहीं। बाप भी खाते हैं, बच्चे उनसे भी तीखे चले जाते हैं। बाबा को तो बहुत आकर प्यार से खिलाते हैं तो कब ले लेते हैं। बाबा भी बहुतों को खिलाते हैं। गिट्टी भी खिलाते हैं। चाय भी हाथ से पिलाते हैं; परंतु इतने सभी की गिट्टी तो नहीं खा सकेंगे, चाय भी नहीं पी सकते हैं। इसलिए बंद कर दिया। दिन-प्रतिदिन वृद्धि को पाते जावेंगे। बाकी बच्चों रहता(ना) बहुत मीठा है। कब भी एक/दो (को) नफरत से न देखना है। बाप तो समझाने लिए कुछ भी कहेंगे। बाप का तो काम है सुधारना। बड़े भाई का काम है छोटे भाई को सुधारना। समझाना पड़े। थप्पड़ आदि लगाने की तो बात ही नहीं। समझाना होता है ऐसी चलन से दास-दासियाँ जाकर बनेंगी। सावधानी दी जाती है कल्याण के लिए। बच्चे कहाँ तंग करते हैं, सुधारने लिए थप्पड़ लगा सकते हो। यह क्रोध नहीं है। मास्टर बच्चों को सुधारने लिए लकड़ी भी लगाते हैं। वह क्रोध भी नहीं। मार से बच्चे सुधर जाते हैं। कोई खराब आदत होती, तो मार से सुधर जाते हैं। यहाँ भी बच्चों (को) सुधारते रहते हैं। दैवीगुण धारण करने लिए सुधारते हैं। देवताओं जैसा गुल-2 बनना है। बच्चों को कितना(इतना) स्ट्रक्टन(स्ट्रिक्ट न) होना चाहिए, जिससे कोई नाराज़ हो। ब्राह्मण है तो खाने करने में कोई हर्जा नहीं है। अगर ऐसे स्ट्रिक्ट रहेंगे तो फिर बुलावेंगे ही क्यों। सिर्फ मुँह देखना है क्या? यह अच्छा नहीं है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।